KHAMOSHI

SILENCE IS GOLDEN

Khamoshi is a Hindi Novel

Written By

Dr Ram Lakhan Prasad

खामोशी

- इस दिलचस्प कहानी को पढ कर कोई भी भारतीय अपने साहित्य के यादों को ताजा कर सकेगा
- उस काल के हर बिलायती को इस कहानी की सच्चाई से शर्म आ जायेगी
- सब पाठक इस कहानी को पढ़ कर बेहद मनोरंजन भी उठायेंगे
- हिन्दी पढ़ने वालों के लिये यह एक बेजोड़ किस्सा है
- भारत में ब्रिटिष राज की एक कल्पित कहानी जो हर एक पढ़ने वाले को सत्य की खोज करने को मज़बूर कर देगी ।

KHAMOSHI

A Fictitious Story by Dr Ram Lakhan Prasad

खामोशी

एक कल्पित कहानी

लेखक
राम लखन प्रसाद

२०१८

Other publications by the author:

- **Explorations in Business Administration**
- **Human Resources Management**
- **History and Development of Education in Fiji**
- **A Handbook for Parents**
- **Motivation Towards 2000**
- **Selling Tactfully- A Customer Driven Approach**
- **Moving Ahead**
- **Bhavnaon Se Bharpur Rachnayen –Hindi**
- **My Roots- From Basti to Botini**
- **Pyar Ka Bandhan – Hindi**
- **Multiple Short Stories and Poems**
- **A Slice of Life**
- **Many Others**

Copyright © Dr Ram Lakhan Prasad

76 Ghost Gum Street Bellbowrie Qld 4070 Australia

srlprasad@hotmail.com

Publishers
Prasad Family Publications Brisbane
2018

समर्पण

१. इस उपन्यास को मैं अपने बुजुर्गों को समर्पित करता हूँ जिन के देख रेख में मेरे बचपन और जवानी की नीव डाली गई थी ।

२. अपने सभी गुरु जानो को मैं सादर बन्दना और प्रणाम करता हूँ जिन के अकथ परिश्रम से मुझ में विद्या का संचार होता रहा ।

३. मुझे मेरे सभी बच्चों और उनके पत्नियों तथा मेरे नाती पोती पोतियों का जो सहयोग मेरे जीवन में मिलता रहा मैं उस सब का आभारी हूँ ।

४. परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा हम पर सदा बनी रही इस के लिए मैं उन का आराधना कर के इस उपन्यास का श्री गणेश करता हूँ |

भूमिका

मैं ने अपने जीवन काल में कई रचनाओं का निर्माण किया है लेकिन यह उपन्यास हमारे लिए एक खास महत्वा रखता है क्यूंकि इस को हम ने बड़े लगन और प्रेम भाव से रचा है । इस का भी एक निजी कारण है । इस उपन्यास का आधार और बुनियाद मेरे आजा और आजी के द्वारा मुझे कराई गई थी जब मैं उन के सेवा सुश्रुषा करते वक़्त उन के मुखारविंद से सुनता रहा ।

मेरे बुजुर्ग तो हम को सारांश में इस उपन्यास की प्रतिष्ठान करवाया था पर मेरे गुरुजनो के विद्या दान से हम ने उस प्राम्भिक कहानी में अपने कलम और शब्दों द्वारा एक ऐसा लहर पैदा करने में समर्थ हुवा हूँ कि जिस से मैं इस उपन्यास को अपने पाठकगण तक पंहुचा सका हूँ ।

मेरे सभी अति दोष और गति दोष के लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ क्युकी इस उपन्यास के रचना करते समय मैं इस में एक दम व्यस्त था और अपने दिल और दिमाग से रचता चला गया जो एक पुस्तक का रूप धारण कर चुकी है और आप के समक्ष है । पढ़िए और आनंद उठाइये ।

आप का भवदीय, राम लखन प्रसाद |

१

यह कहानी हमारे आजा सरजू महाजन ने हम को सारांश में १९५० में बताया था और यह हमारे मस्तिस्क में तब से पल और गूँज रही थी। मेरे आजा उत्तरप्रदेश के निवासी थे। हो सकता है कि मैं इस में की कुछ कड़ियों को भूल गया हूँ। यह भी मुमकिन है कि मैं इस में कुछ अपनी भी जोड़ कर इस को और भी दिलचस्प बनाने की कोशिश की है। जो भी कुछ हो यह कहानी में जितना इतिहासिक सत्य है ठीक उतना ही इस में हमारी कलपना भी छिपी हुई है।

यह तो मानी हुई बात है कि हमारा शरीर बिना जीव के एक खाली बरतन के तरह है जिस का कोई मोल नहीं है और ना ही उस का इस पेंचीला संसार में कोई कदर हो सकता है। हां, उस शरीर में अगर एक उत्तेजित जान डाल कर देखें तो वही व्यक्ति हमें बड़े से बड़े चमत्कार या अद्भुत काम कर के दिखा सकता है। यही इस युग में कुदरत की देन है। हर इनसान के अन्दर एक ऐसी ही अजीब सी शक्ति छिपी होती है जो उस को अपने करम करने को सही प्रेर्णा देती है। उस व्यक्ति को जागृत हो कर, टुक नींद से जाग कर अपने असली महत्व को पहचानने की ताकत को उत्तेजित करने की अत्यन्त जरूरी है।

दुखः इस बात की है कि हम में से बहुत लोग अपने अन्दर की दैवी शक्ति को पहचान नहीं सकते हैं। जैसे हम बिना शीशे के सहारा लिये अपने आँख को खुद नहीं देख सकते है पर उस के चमत्कार को देख सकते हैं या बर्फ जम जाने पर पानी कहीं नजर नहीं आती इसी प्रकार हम आम लोग अपने ही भीतर की छुपी हुई पूरे सच्चाई का अनुभव सहज से नहीं कर पाते हैं। लेकिन कुछ लोगों को ईशवर ने इस प्राकृतिक व्यवस्था से सुसज्जित कर के हमारे समक्ष भेज देते हैं। वैसे ही लोगों के चमत्कार से हमारा कल्याण हो पाता है।

इस के विपरीत कुछ लोग कई कारणों से अपने आप से हताश हो कर थक जाते हैं और अपने जीवन में बहुत सी गलतियों को कर बैठते हैं। अपने कार्य को वे उपयुक्त करने के लिये या खामोशी का सहारा लेते हैं या कोई कुकरम कर के उस कार्य की सजा भुगतने के लिये तैयार हो जाते हैं। यह भी हो सकता है कि वे बुरे से बुरे कार्य को कर के कानून से बच निकलते हैं। पर

उस ईशवर के संसार में इनसाफ मिलने में देर हो सकती है लेकिन अंधेर कभी नहीं होगी ।

एक पढ़ा लिखा और होनहार नौजवान जिस का नाम उस के माता पिता ने बहुत सोच समझ के *भारत* रखा था, बीस साल बाद आज बिलायत से दिल्ली लौट रहा था । विलायत में उस ने कड़ी मेहनत कर के, अपने लगन और हुनर से एक बेजोड़ और अपार व्यापार का एकमात्र मालिक बन गया था । उस के पास वहां सभी साधन थे, पैसा था, जायदाद थी, समाज में इज्ज़त थी पर वहां उस के मन को शान्ति नहीं मिलती थी और उस के दिल तथा दिमाग को सुकून देने वाली कोई भी चीज़ नजर नहीं आती थी । वह लखपति होते हुये भी बेचैन था, उसे कोई सोच या दुखः अन्दर ही अन्दर खाये जा रही थी । उसे अपने मात्रभूमि की याद तो सताती ही थी और वह अपने लोगों के लिये कुछ करना चाहता था पर इस के अलावे वह कोई बदले की आग में जल रहा था ।

जब *भारत* हिन्दुस्तान छोड़ कर बिलायत गया था तब उसे यह कदम मजबूरन उठाना पड़ा था । उस समय हिन्दुस्तान ब्रिटिश सरकार के आधीन था । देश एक उपनिवेश था । अंग्रेज लोग भारतीयों को सभी प्रकार से लूट रहे थे, सता रहे थे, अपनी ताकतवर हुकूमत चला रहे थे और उन की ही बोलबाला सभी तरफ थी । *भारत* के माता पिता,गोबिन्द और यशोदा, की अपनी जमीनदारी थी जिस को अंग्रेजों ने उन से छीन लिया था और उन को बहुत सताया था ।

भारत उस समय केवल बारह वर्ष का बालक था और वह तब अनाथ हो गया था,और वह बेघरबार हो गया था । उस के परिवार के लोगों को जलियनवाला बाग के मुनभेड़ में गायब कर दिया गया था । *भारत* को एक अंग्रेज पादरी मायकल ने गोद ले कर मदद की थी और उस को देश से निकाल कर बिलायत ले गया था । वहीं लनदन में पादरी मायकल के देखरेख में भारत की शिक्षा दिक्षा भी हुई थी ।

जब पादरी मायकल का देहांत हो गया तब *भारत* दूसरी बार अनाथ हो गया था पर वह हिम्मत नहीं हारने वाला था कयोंकि उस के अन्दर एक अजीब सी ज्वालामुखी भड़क रही थी । पादरी मायकल ने उस के अन्दर अपने जनम भूमि की भक्ति और लगन भर दी थी । *भारत* अब पूरे तौर से देश प्रेमी और देश भक्त हो गया था । बन्दे मात्रम ही उस का एक मात्र नारा बन गया था ।

यही उमंग और लगन को लेकर *भारत* आज पंद्रह सालों बाद अपने मेहनत और तजुरबे से बिलायत में घर जमीन के खरीदने बेचने के व्यापार में लग कर लाखों का मालिक बन गया था । उस ने बिलायत में दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति कर के एक करोड़पति तो बन गया था पर अपने जनम भुमि की रक्षा के लिये वह आज भी गरीब का गरीब ही रह गया था ।

उस को हिन्दुस्तान लौट कर अपने लोगों के लिये कुछ कर के दिखाना था जिस से उस के मन को शान्ति मिल सके। इसी लक्षय से वह आज अपने देश लौटा था। सर्वप्रथम उस ने अपने पूजय माता पिता की खोज में लग गया था। अभी भी अंग्रेज देश को खोखला करने में लगे हुये थे पर अब उन में कुछ समझदारी आ गई थी।

यहाँ कुछ इतिहासिक बातों को लिखने से पाठक को इंग्लैंड की प्रशासन का हाल भी मालूम हो जाएगा। इंग्लैंड की 'ईस्ट इंडिया कंपनी' ने १७५७ से १८५६ के बीच लगभग संपूर्ण भारत पर अपना अधिकार कर लिया। अपनी सत्ता को दृढ़ बनाने हेतु अंग्रेजों ने यहाँ नई शासन व्यवस्था प्रारंभ की।

स॰ ९७६५ में राबर्ट क्लाइव ने बंगाल में दोहरी शासन व्यवस्था की नींव रखी। राजस्व वसूली का कार्य कंपनी ने अपने हाथ में रखा तथा कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने का दायित्व बंगाल के नवाब को सौंपा। इसी को 'दोहरी शासन व्यवस्था' कहते हैं। दोहरी शासन व्यवस्था के दुष्प्रभाव कालांतर में दिखाई देने लगे।

सामान्य जनता से कर के रूप में वसूला गया धन कंपनी के अधिकारियों की जेब में जाने लगा। भारत में चलनेवाले व्यापार का एकाधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी को दिया गया था। फलस्वरूप इंग्लैंड की व्यापारिक कंपनियाँ ईस्ट इंडिया कंपनी से ईर्ष्या करती थीं। इस कारण ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा चलाए जा रहे भारतीय प्रशासन की आलोचना होने लगी। फलत: कंपनी के प्रशासन पर नियंत्रण रखने हेतु इंग्लैंड की पार्लियामेंट ने कुछ महत्वपूर्ण कानून बनाए।

स॰ १७७३ के रेग्यूलेटिंग एक्ट के अनुसार बंगाल के गवर्नर को 'गवर्नर जनरल' पद दिया गया। उसे मुंबई और चेन्नई (मद्रास) प्रांत की नीतियों पर नियंत्रण रखने का अधिकार प्राप्त हुआ। उसकी सहायता करने के लिए चार सदस्यीय समिति का गठन किया गया।

स॰ १७८४ में भारत कानून पारित हुआ। भारत के प्रशासन पर पार्लियामेंट अपना नियंत्रण रख सके; इसके लिए स्थायी रूप में नियामक मंडल का गठन किया गया। इस मंडल को भारतीय प्रशासन से संबंधित आदेश कंपनी को देने का अधिकार दिया गया था।

स॰ १८१३, १८३३ और १८५३ में पार्लियामेंट ने कंपनी के प्रशासन में परिवर्तन करने हेतु कानून पारित किए। इस प्रकार कंपनी के भारतीय प्रशासन पर अंग्रेजी शासन का अप्रत्यक्ष नियंत्रण प्रारंभ हुआ। अंग्रेजी सत्ता के पीछे-पीछे नई प्रशासकीय व्यवस्था भारत में प्रचलित हुई। प्रशासकीय

सेवाएं, सेना, पुलिस विभाग और न्याय संस्था अंग्रेजों के भारतीय प्रशासन के प्रमुख आधार स्तंभ थे ।
अंग्रेजों को भारत में अपनी सत्ता को दृढ़ करने के लिए नौकरशाही की आवश्यक्ता थी । इस नौकरशाही को लार्ड कार्नवालिस ने आरंभ किया । प्रशासकीय सेवाएँ अंग्रेजी शासन का महत्वपूर्ण अंग बनीं । कार्नवालिस ने नियम बनाया कि कंपनी के अधिकारी निजी व्यापार न करें । इसके लिए उसने अधिकारियों के वेतन में वृद्धि की ।
प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से अंग्रेजों के अधीनस्थ प्रदेशों को विभिन्न जिलों में बाँटा गया । जिलाधिकारी जिले का प्रमुख होता था । उसपर राजस्व इक्टठा करना, न्याय प्रदान करना, कानून एवं सुव्यवस्था को बनाए रखना जैसे दायित्व थे । इंडियन सिविल सर्विसेस (आई॰सी॰एस॰) की प्रतियोगिता परीक्षाओं द्वारा इन अधिकारीयों की नियुक्तियाँ की जाने लगीं ।
अंग्रेजों के अधीनस्थ प्रदेशों का संरक्षण करना, नए प्रदेशों को जीतना और भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध होनेवाले विद्रोह को विफल बनाना आदि सेना के कार्य थे । देश में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने का दायित्व पुलिस विभाग पर था ।
इंग्लैंड की न्याय प्रणाली पर आधारित न्याय व्यवस्था भारत में प्रचलित की गई । प्रत्येक जिले में दीवानी मुकदमों के लिए दीवानी न्यायालयों और आपराधिक मुकदमों के लिए फौजदारी न्यायालयों की स्थापना की गई । उनके निर्णयों के पुनरावलोकन के लिए उच्च न्यायालयों कई स्थापना की गई ।
भारत में पहले विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग कानून थे । न्यायदान करते समय जाति के आधार पर भेद-भाव किया जाता था । लार्ड मेकाले के अधीन गठित की गई 'विधि समिति' ने कानून की नियमावली बनाई और संपूर्ण भारत में समान कानून लागू किया । न्यायव्यवस्था के संबंध में अंग्रेजों ने यह सिद्धांत प्रचलित किया कि कानून की दृष्टि में सभी समान हैं ।
इस प्रणाली में भी कुछ दोष थे जैसे- यूरोपीय लोगों पर मुकदमा चलाने के लिए स्वतंत्र न्यायालय और भिन्न कानून बनाए गए थे । सामान्य लोग नए कानून समझ नहीं पाते थे । सामान्य लोगों के लिए न्याय पाना खर्चीली बात थी । मुकदमे कई वर्षो तक चलते रहते थे ।
प्राचीन समय से भारत पर आक्रमण होते रहे । कई आक्रमणकारी भारत में स्थायी रूप में बस गए । वे भारतीय संस्कृति में घुलमिल गए । यद्यपि

उन्होने यहाँ अपने राज्य स्थापित किए । फिर भी उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था में मौलिक परिवर्तन नहीं किए थे परंतु अंग्रेजों के बारे में ऐसा नहीं था ।

इंग्लैंड आधुनिक राष्ट्र था । वहाँ औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप पूँजीवादी अर्थव्यवस्था प्रचलित हुई थी । उन्होंने इस व्यवस्था का पोषण करनेवाली अर्थव्यवस्था को भारत में प्रचलित किया । इससे अंग्रेजों को लाभ हुआ परंतु भारतीयों का आर्थिक शोषण प्रारंभ हुआ ।

अंग्रेजों के शासन से पूर्व हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर थी । कृषि एवं अन्य व्यवसायों द्वारा गाँव की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती थी । भू राजस्व राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था । अंग्रेजी शासन के पूर्व लगान का निर्धारण फसलों के अनुसार किया जाता था ।

फसल अच्छी न होने पर लगान में छूट दी जाती थी । भू राजस्व प्रमुखत: अनाज के रूप में लिया जाता था । लगान अदा करने में विलंब होने पर भी किसानों से उनकी भूमि छीनकर नहीं ली जाती थी । अपनी आय को बढ़ाने के लिए अंग्रेजों ने भूमि की भू राजस्व प्रणाली में परिवर्तन किए । अंग्रेजों ने भूमि मापन के आधार पर क्षेत्रफलानुसार लगान का निर्धारण किया । यह कड़ाई कर दी गई कि लगान निर्धारित समय पर एवं नकद राशि के रूप में अदा करें ।

नियम यह भी बनाया गया था कि समय के भीतर लगान अदा न करने पर किसानों की भूमि जब्त कर ली जाएगी । राजस्व इकट्ठा करने की अंग्रेजों की पद्धति भारत के विभिन्न भागों में अलग-अलग थी । सभी जगह किसानों का शोषण होता था ।

भू राजस्व की नई नीति के ग्रामीण जनजीवन पर अनिष्टकारक परिणाम हुए । लगान अदा करने के लिए किसान जो भी दाम मिले उस दाम पर अनाज बेचने लगे । व्यापारी और बिचौलिए उचित दामों से भी कम दामों पर किसानों का माल खरीदने लगे ।

समय आने पर किसानों को लगान अदा करने हेतु अपने खेत साहूकार के पास गिरवी रखकर ऋण लेना पड़ता था । इसके फलस्वरूप किसान ऋण के बोझ से लदते गए । ऋण न चुकाने पर उन्हें अपने खेत बेचने पड़ते थे । शासन, जमींदार, साहूकार, व्यापारी आदि सभी किसानों का शोषण करते थे ।

किसान पहले मुख्य रूप से अनाज पैदा करते थे । इस अनाज का उपयोग वे घरेलू और गाँव की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए करते थे । अब

अंग्रेजी शासन किसानों को कपास, नील, तमाखू, चाय आदि व्यापारिक फसलों को उगाने के लिए प्रोत्साहन देने लगे । अनाज की उपज लेने के बदले व्यापारिक फसलें उगाने पर बल दिया जाने लगा । इस प्रक्रिया को 'कृषि का व्यापारीकरण' कहते हैं ।

स° १८६० से १९०० के बीच भारत में भीषण अकाल पड़ा था परंतु अंग्रेज शासकों ने न तो अकाल निवारण के लिए पर्याप्त उपाय किए और न ही जलपूर्ति योजनाओं पर विशेष व्यय किया । अंग्रेजों व्यापार में वृद्धि करने तथा उसके लिए आवश्यक प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने हेतु भारत में यातायात एवं संचार व्यवस्था की सुविधाएँ निर्मित की । उन्होंने कोलकता और दिल्ली को जोड़नेवाले महामार्ग का निर्माण करवाया ।

जो भी हो अंग्रेजों ने भारत से न जाने कितने माल खजानो को जपत कर के अपने देश लेते गए और भारत को खोखला करते गए । इंग्लैंड की उन्नति होती रही और हिंदुस्तान में गरीबी छाती गई ।

ooo

२

कुछ भले लोगों के मदद से *भारत* ने अपने जमीनदारी को और अपने पिता को खोज ही लिया था। भारत के माता यशोदा का तो देहान्त ब्रिटिश सरकार के कैद ही में हो गया था पर उस के पिता गोविन्द के मदद से उस ने एक नई जमीनदारी हिमाचल प्रदेश के रामपुर में हिमालय पर्वत के छाये में स्थापित किया।

हिमालय संसार का सब से ऊंचा पर्वत ही नहीं है पर उस के आसपास की धरती पवित्रता से परिपूर्ण है जहां भगवान के असीम कृपा से सभी वातावरन शुद्ध और जमीन में एक अदभुत प्राकृतिक ताकत है। वहां की धरती धन्य है और वहां जो भी जीव जन्तु या पेड़ पौधे उगते हैं उन पर एक पवित्र दैवी शक्ति और अपूर्व दिव्य बल का असर ईशवर की महान कृपा से अनायास ही मिल जाता है।

भारत के पिता गोविन्द ने अपने अच्छे दिनों में इस सम्पति या मिलकियत को अपने भविष्य की जरूरत के लिये सिमला नगर के पूरब में खरीद रखा था। आज वर्षों बाद ऐसे ही पुनीत स्थान पर *भारत* ने अपने नये जमीनदारी की नीव रामपुर में ड़ाली और उस आलीशान धरातल का नाम *कुदरत* रखा था। *भारत* का विशवास था कि इस नाम से उस जमीनदारी पर ऊपर वाले की असीम कृपा सदा ही बनी रहेगी और उस में की गई कोई भी योजना या किसी भी प्रकार की खेतीबारी सदा मंगलमय और सफल ही होगी।

भारत के लिये इस हिमाचल प्रदेश के पुनीत जायदाद मानो ईशवर की देन थी जहां की शान्त और सुन्दर वातावरन में अपना बसेरा या घर बनाना उस के लिये अति प्रसन्नता का विषय था। रामपुर के एक ऊंचे स्थान पर *भारत* ने अपना मन चाहे मकान का निर्माण कर लिया। इस स्थान से सारे जमीनदारी की शोभा नज़र आती थी। यहां की खामोशी किसी भी मन को प्रभावित कर सकती थी और *भारत* के लिये तो अब यही उस का अपना ही स्वर्ग बन गया था।

एक तरफ गंगा नदी की अमृत जलप्रवाह और दूसरे तरफ जमुना की सभ्यता का प्रभाव होने के कारण यह धरती पर इस *कुदरत* की शक्ति या बल का महत्व को हम सहज से बखान ही नहीं कर सकते हैं। सच में यहीं पर अब

भारत हम सब को *कुदरत* की करिशमा को दिखायेगा । आगे आगे देखिये होता है कया ।

भारत ने अपनी नई जीवन का निर्वाह इसी जमीनदारी पर करना आरम्भ किया । सब से पहले उस ने एक हांथी को लाया जिस का नाम गनेश था । सारे जायदाद में फसल लहराने लगे थे और इस *कुदरत* की शोभा पर चार चांद लग गये थे । *भारत* आज एक संतोष का सांस तो ले रहा था पर उस के लक्षय के पूरे होने में अभी भी बहुत बिलम्भ था । उस को बिलायती सत्ता की अन्त देखना था और अपने देश की आज़ादी चाहिये थी ।

देश अभी भी अंग्रेजों के आधीन था और आजादी की कोई भी गुनजाइश नहीं थी । हिन्दुस्तानियों के लिये सभी तरह की सफलता अभी भी बड़े मुशिकल से आती थी कयोंकि सभी कार्यवाही अभी भी ब्रिटिश सरकार के हांथों में ही थी । *भारत* के पिता गोविन्द को एक चिनता सताये जा रही थी कि उस का बेटा अभी भी कुवांरा था और उस के लिये एक होनहार पतनी की खोज जारी की गई ।

भारत बड़ा भाग्यशाली था कयोंकि भगवान का आशिर्वाद उस के साथ था पर वहां के लोग *भारत* की सफलता को संदेह की नजर से देखते थे । भाग्य की रेखा उन के लिये वहमी लगती थी । *भारत* के *कुदरत* के जमीन पर वर्षा भी ठीक होती थी और उस के फसल भी सभी बाजार के फसल से बड़े और सुन्दर रहते थे । इस सफलता के लिये वहां के लोगों के पास कोई समझबूझ नहीं थी । *भारत* के *कुदरत* के चमत्कार से और अपनी मेहनत तथा लगन से वह धनी होता गया और वहां के लोग अपने जलन भाव और लापरवाही से गरीब के गरीब ही रह गये ।

फिर *भारत* के *कुदरत* पर गनेश जैसे हांथी की शक्ति भी थी । गनेश की देखभाल करने के लिये एक निपुर्ण हाथीवान या महावत नियुक्त किया गया था । हांथीवान महेश गनेश के हर एक खूबी और महत्व से भरपूर वाकिफ था तथा उस हांथी के नस नस की असलियत से परचित था । इसीलिये गनेश का पूरा आशीर्वाद भी *कुदरत* पर सदा बना रहता था । गांव वाले तो गनेश की पूजा करते थे और उस को कितने प्रसाद भी चढ़ाते थे ।

भारत के लिये सफलता अकसमात ही आती थी । उसे इस की कोई खास खोज की जरूरत नहीं होती थी । वह केवल अपने देश के लोगों की मदद में लगा रहता था । उस ने अपने अनुसनधान द्वारा अपने *कुदरत* के खेतों में तरह तरह के औषधीय जड़ी बूटियों को उगा कर सभी देश के जरूरतमन्द लोगों तक पहुचाने की कोशिश में लगा रहता था । उन दिनो केवल अर्युवेद की औषधियों और दवा से ही आम जनता की सेवा होती थी तथा पक्षिमी दवा दारू को बहुत

मानयता नहीं दी जाती थी । भारत के *क़ुदरत* के सभी दवा अब पूरे हिन्दुस्तान में ही प्रचलित नहीं पर देश विदेश में बहुत प्रसिद्ध हो चली थी । अब हिंदुस्तान में उस समय के व्यवपारिक ढाचें का जिक्र जरुरी है जिस से पाठक को उस समय के व्यापारिक गहराइयों का पता चल सके ।

प्रारंभ में यूरोपीय व्यापारी मुगल शासकों से अनुमति प्राप्त करके शांतिपूर्ण ढंग से व्यापार करते थे । व्यापारिक सुविधाओं के लिए पुर्तगाली, डच, अंग्रेज और फ्रांसीसी व्यापारियों ने भारत में अपने व्यापारिक केंद्र बनाए । इन स्थानों को 'गोदाम' कहते थे ।

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल सत्ता का पतन प्रारंभ हुआ । मुगल साम्राज्य के सूबेदार मनमाने ढंग से आचरण करने लगे । देश में राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो गई । यूरोपीय व्यापारियों ने इसका लाभ उठाया ।

भारत में चल रहे व्यापार में एकाधिकार पाने के लिए विदेशी सत्ताओं में जबर्दस्त होड़ मची हुई थी । अठारहवीं शताब्दी में कर्नाटक के नवाब की गद्दी को लेकर भारतीय सत्ताधीशों के बीच विवाद प्रारंभ हुआ । फ्रांसीसी और अंग्रेज भांप गए कि कर्नाटक की राजनीति में प्रवेश पाने का यही सुनहरा अवसर है ।

अत: गद्दी पाने के लिए लालायित एक प्रतियोगी को फ्रांसीसियों ने तथा उसके विरोधी प्रतियोगी को अंग्रेजों ने सैनिक सहायता दी । इस स्पर्धा के चलते अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच तीन युद्ध हुए । इन्हें 'कर्नाटक युद्ध' कहा जाता है । तीसरे युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को पराजित किया । फलस्वरूप अब भारत में अंग्रेजों के सम्मुख अन्य कोई प्रबल यूरोपीय सत्ता नहीं बची थी ।

बंगाल में अंग्रेजी और फ्रांसीसी प्राप्त व्यापारिक सुविधाओं का दुरुपयोग करने लगे थे । बंगाल के नवाब सिराजुद्दौल्ला से अनुमति न लेते हुए अंग्रेजों ने अपने गोदामों के चारों ओर परकोटे बनवाए । परिणामस्वरूप सिराजुद्दौल्ला और अंग्रेजों के बीच विवाद शुरू हुआ ।

स॰ १७५७ में प्लासी में इन दोनों के बीच युद्ध हुआ । अंग्रेजों ने मीर जाफर को नवाब पद का लालच दिखाकर उसे अपने पक्ष में कर लिया । उसने अपने नेतृत्व में नवाब की सेना को युद्ध में उतारा ही नहीं । नवाब सिराजुद्दौल्ला को पीछे हटना पड़ा । इस प्रकार अंग्रेजों ने शस्त्र शक्ति का प्रयोग किए बिना कूटनीति से प्लासी के युद्ध में विजय पाई ।

अंग्रेजों के समर्थन से मीर जाफर बंगाल का नवाब बना परंतु कालांतर में उसके द्वारा अंग्रेजों का विरोध किए जाने पर अंग्रेजों ने उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया । जब मीर कासिम ने अंग्रेजों के अवैध व्यापार की रोकथाम करने का प्रयास किया तो अंग्रेजों ने पुन: मीर जाफर को नवाब की गद्दी प्रदान की ।

बंगाल में चल रही अंग्रेजों की गतिविधियों पर अंकुशा लगाने के लिए अवध के नवाब शुजाउद्दौल्ला, मीर कासिम और मुगल शासक शाह आलम ने इकट्ठे होकर अभियान चलाया । ई॰स॰ १७६४ में बिहार में बक्सर नामक स्थान पर अंग्रेजों के साथ इन्होंने युद्ध किया ।

इस युद्ध में अंग्रेज विजयी हुए । इस युद्ध के पश्चात इलाहाबाद की संधि हुई । इस संधि के अनुसार अंग्रेजों को बंगाल प्रांत का राजस्व वसूल करने का अधिकार प्राप्त हुआ । इसे 'दीवानी अधिकार' कहते है । इस तरह अंग्रेजों ने बंगाल में अंग्रेजी सत्ता की नींव रखी ।

मैसूर शासक और अंग्रेजों के बीच चार बार युद्ध हुए । मैसूर के हैदर अली के पश्चात उसके पुत्र टीपू सुलतान ने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रखरता से अभियान चलाया । स॰ १७९९ में श्रीरंगपटटण में हुए युद्ध में टीपू वीरगति को प्राप्त हुआ । फलस्वरूप मैसूर राज्य पर अंग्रेजों का शासन स्थापित हो गया ।

फलस्वरूप अंग्रेजों को भारत को लूटने का अच्छा अवसर प्राप्त हुवा और यह लूटमार आजादी आने तक चलती रही ।

ooo

३

जब भारत की *कुदरत* अपने सफलता के चोटी पर पहुंची और उस के मुनाफे की कोई थाह ही नहीं रही तब भारत के पिता गोविन्द को भारत के विवाह की फिकर भी और बढ़ गई । भारत तीस वर्ष का हठा खठा होनहार और सफल नौजवान था । वह यह भी जानता था कि एक न एक दिन उस के गले में भी किसी की वरमाला पड़ेगी तथा उस की भी शादी होगी ।

पर आज तक उस के सामने किसी भी विवाह का प्रस्ताव नहीं आया था और ना ही उस ने किसी तरह की बीबी की अनुमान किया था । उस के भोजन उस के रसोइया चमनलाल पका देता था और चमनलाल की बीबी मीना अन्य नौकरों के साथ धर आंगन की सब सफाई कर देती थी । *कुदरत* के खेतों में तो कई नौकर चाकर लगे रहते थे । शाम को काम के बाद गुफतगू करने के लिये उस के महावत महेश से गपशप हो जाती थी या तो वह टहल कर गांव के एक इसाई मुख्यअध्यापक चाली के पास अपना कुछ समय गुजार कर ग्यान ध्यान की बातें कर लेता था ।

इसी तरह भारत की हर जरूरत की पूर्ति हो जाया करती थी । तब उसे बीबी की ना तो जरूरत हुई और ना ही उसे इस की कोई फिकर हुई थी । पर आज जब उस के पिता ने उस के सामने उस के विवाह का प्रस्ताव रखा तब उस की खामोशी और भी बढ़ गई थी । वह कई छण इस के बारे में सोचता रहा और अपने आप के अंदर के विचारों से लड़ता रहा ।

पर जब उस के पिता ने यह कहा, "बेटा, तुम्हारे *कुदरत* की सफलता और तुम्हारे जीवन की उतार चढ़ाव को देखते हुये मुझे एक पिता का फर्ज निभाने का मौका मिलना चाहिये जिस से मैं तुम्हारे लिये एक योग्य पत्नी खोज सकूं । इस संसार में कोई भी सफलता बिना गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूरी नहीं होती है । हर एक सफल आदमी के पीछे एक होनहार पत्नी का सहयोग होना बहुत ही जरूरी है ।" तब भारत को इस के बारे में और भी गम्भीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत पड़ी ।

भारत ने अपने आप को एक पत्नी और बच्चों के साथ रहने की कल्पना करना शुरू किया । आज तक वह अपने लिये और अपने समाज के लिये ही जीता था तथा अपने परिवार के बारे में उस ने सोचा ही नहीं था । आज उस के पिता ने

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below